कुलदीप नैयर की पत्रकारिता:भारत-पाक संबंध

Kuldeep Nayar's journalism: Indo-Pak Relation

जनसंचार में एम. फिल. उपाधि की आंशिक प्रतिपूर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

सत्र-2016-17

शोध निर्देशक
डॉ. रेणु सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर
जनसंचार विभाग

शोधार्थी
सौरभ राय
पंजीकरण संख्या -2016/05/208/006

जनसंचार विभाग
(मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ)
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय गांधी हिल्स, वर्धा – 442005 (महाराष्ट्र) भारत

अनुक्रमणिका	
आभार	
पहला अध्याय	1-10
प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि	
दूसरा अध्याय	11-18
साहित्य पूर्वावलोकन	
तीसरा अध्याय	19-38
कुलदीप नैयर: बहुआयामी व्यक्तित्व	
चौथा अध्याय	39-103
डेटा प्रस्तुतीकरण लेखों का अंतर्वस्तु विश्लेषण	
पांचवां अध्याय	104-110
समान्यीकरण एवं निष्कर्ष	
संदर्भ ग्रंथ सूची परिशिष्ट	

पहला अध्याय : प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

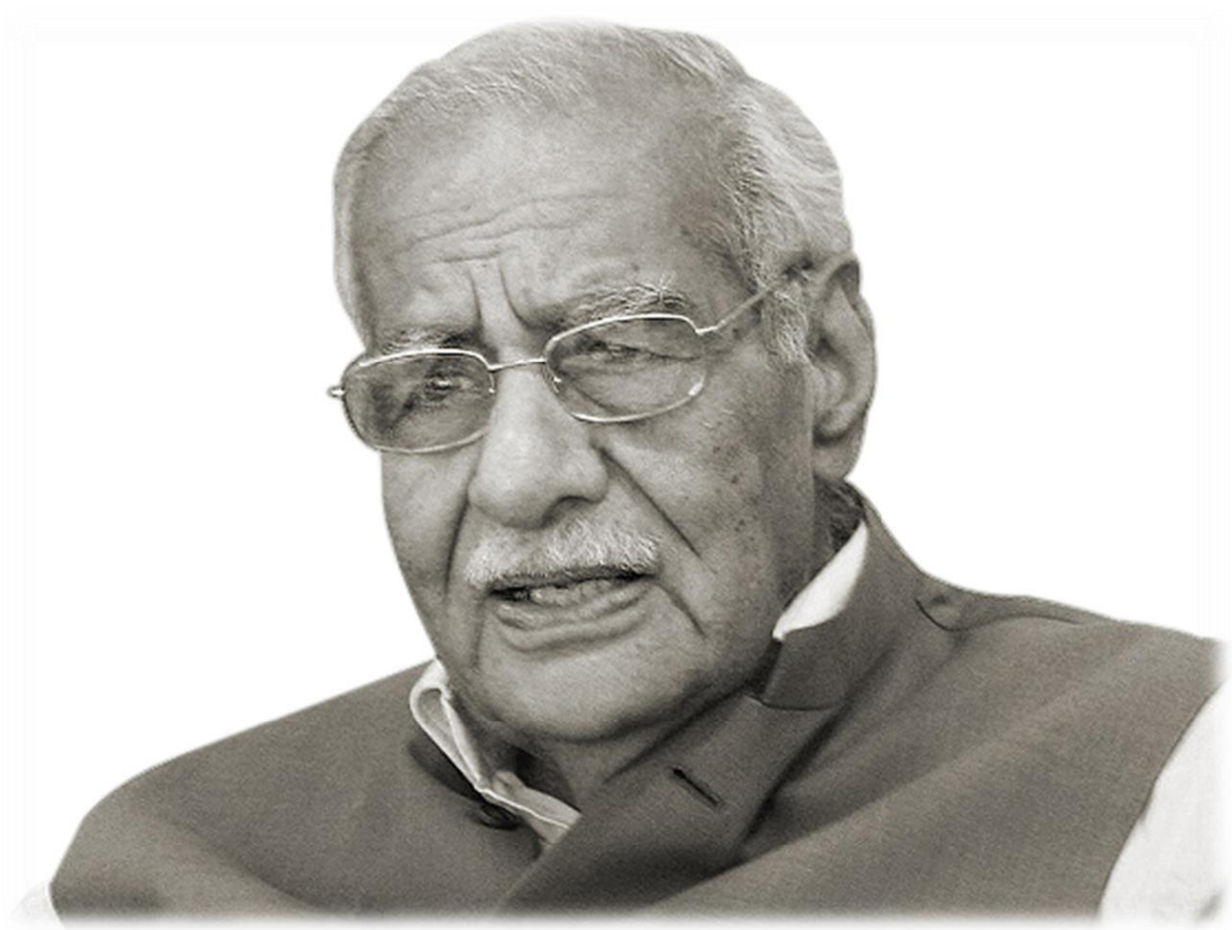

कहाँ तक इस वक्त के दरिया को ठहरा हुआ देखें।

ये हसरत है कि इन आँखों से कुछ होता हुआ देखें।।

"शहरयार"

प्रस्तावना

कुलदीप नैयर भारत के प्रसिद्ध लेखक एवं पत्रकार हैं। आजादी के 70 साल बाद भी कुलदीप नैयर को भारत-पाकिस्तान संबंधों पर कुछ कहना हो तो, वे उपर लिखी गयी शहरयार की इन्ही पंक्तियाँ को दोहराएंगे। कुलदीप नैयर भारत और पाकिस्तान के संबंधों को लेकर के हमेशा से सक्रीय भूमिका में रहे हैं। वे चाहते हैं कि यह दोनों देश जो कभी एक ही हिस्सा हुआ करते थे, एक भाई कि तरह रहें। दोनों देशों के बीच अमन और शांति को लेकर वे हमेशा प्रयासरत रहते हैं। भारत पाक संबंधों कि शुरुआत सन् 1947 के बाद सामने आई जब अंग्रेजों ने इसे दो हिस्सों में बाँट दिया पाकिस्तान भारत का ही हिस्सा था पर देश की आजादी के साथ भारत का विभाजन भी हो गया तथा विभाजन के कारण उत्पन्न समस्याओं से ही दोनों देशों में शत्रुता भी प्रारम्भ हो गई।

अब तक दोनों देशों के मध्य छोटे-बड़े कुल चार युद्ध हो चुके हैं। लेकिन सभी समस्याएं पूर्वत बनी हुयी हैं। अगर हम देखें तो भारत और पाकिस्तान के संबंधों की पृष्ठभूमि भावनात्मक लगाव एवं अप्रत्यक्ष घटनाओं का इतिहास है। [1]शत्रुतापूर्ण पड़ोसी और कुछ विदेशी देश भारत में कट्टरपंथी ताकतवर अलगाववादी प्रवृत्तियों और आतंकवाद के सिद्धांत पर निर्मित भारत की पंथनिरपेक्षता पर तब और भी बुरा प्रभाव पड़ता है जब वह स्वयं को धर्म आधारित पड़ोसी देश के बीच फंसा पाता है। निकटतम पड़ोसी होने के बावजूद पाकिस्तान अपनी भारत-विरोधी एवं विघटनकारी नीतियों के कारण भारत से लगातार दूर होता गया।

वर्तमान में आतंकवाद एवं कश्मीर विवाद से दोनों देशों के संबंध कड़वाहट से भर गए। भारत ने पाकिस्तान के साथ शांति, मित्रता एवं सहयोगपूर्ण संबंध स्थापित करने के लिए सदैव गंभीर प्रयास किये हैं। इन प्रयासों में भारत के विभिन्न बुद्धिजीवियों ने भी अपने स्तर से प्रयास किया। जिसमे कुलदीप नैयर का नाम सर्वोपरी है। भारत - पाक संबधों को जानने के लिए हमें थोड़ा पीछे जाना होगा जब हिंदुस्तान में ब्रिटिश राज्य था।

अंग्रेजों ने भारत पर शासन करने के लिए यहाँ के लोगों में धर्म के नाम पर क्षेत्र के नाम पर फूट डाला तथा इसके सहारे वे भारत पर तीन दशक तक शासन करते रहे। तोड़ो और राज करो कि नीति ने भारत कि संप्रभुता एवं अखंडता को हानी पहुँचाया। यह जो नफरत हम दोनों देशों के बीच देख रहे हैं उसका बीज अंग्रेजों ने आते ही भारत में बो दिया था।

---

[1] सिंह,एन. ,(2012).भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं विश्व के प्रमुख संगठन,पृष्ठ,

जिसका असर हमें 1947 में दिखा, जब अंग्रेज भारत छोड़ कर जाने लगे, उन्होंने इस भारत वर्ष को दो हिस्सों में बाँट दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि पाकिस्तान का गठन सबसे बड़ी कूटनीतिक गलती थी।

जिसका परिणाम यह हुआ कि पाकिस्तान बनने के मूल में ही नफरत थी, जो खत्म होने के बजाय और बढ़ती ही गयी और आखिर में वह अब एक दुनिया कि नजर में दहशतगर्दी फैलाने वाले देश की शक्ल में सामने है। जब भी हम किसी विचारधारा को धर्म,क्षेत्र,जाती,नस्ल आदि के आधारों पर आपना नजरिया बना कर देखते हैं तो वह उस पूरी मानव जाती के लिए खतरनाक सिद्ध होता है क्यूंकि उसके मूल में कहीं न कही कट्टरता होती है।

एक प्रगतिशील मानव समाज में इसका कोई स्थान नहीं होता है। लेकिन जब पाकिस्तान बना तो उसके नीवं में प्रगतिशीलता नहीं बल्कि धार्मिक कट्टरता थी , और इसके लिए पूरी तरह से उस वक्त में जिम्मेदार मोहम्द अली जिन्ना ही थे। कुलदीप नैयर विभाजन के लिए पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना को यह कहते हुए जिम्मेदार ठहराया है कि "[2]*धर्म के आधार पर नये राष्ट्र का निर्माण भूल थी।* उस भूल का नतीजा है कि आज भी हमारे रिश्ते नहीं सुधरे पाएं हैं। " किसी भी संबंधो को सुधाराने के लिए दोनों तरफ से विश्वास और सहयोग होना चाहिए।

भारत - पाक संबंधों में सहयोग तो देखने को मिलता है, पर व्यापर के रूप में या अन्य किसी भी प्रकार से लेकिन सबसे ज्यादा कमी इन दोनों देशों में विश्वास कि है। और यही अविश्वास दोनों देशों के बिच रोड़ा बन के खड़ा हुआ है। इसी रोड़े को हटाने का कार्य आज भी कुलदीप नैयर जैसे पत्रकार कर रहे हैं। इस सोच को वे अपनी किताब में कुछ इस प्रकार से लिखते हैं कि "मेरा विश्वास है कि किसी दिन दक्षिण एशिया के सभी देश यूरोपीय संघ की तरह अपना साझा संघ बनाएंगें। " वे आगे लिखते हैं कि इससे उनकी पहचान पर कोई असर नहीं पड़ेगा,लेकिन इससे उन्हें गरीबी की समस्या से लड़ने में मदद मिलेगी, और साथ ही आमिर और बेहद गरीब देशों के बीच की खाई भी पाटी जा सकती है।

इससे दोनों देशों में सम्बन्ध और विश्वास बढेगा जिससे सभी देशों को फायदा होगा। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई जी ने पाकिस्तान के संदर्भ में कहा था कि "[3]हमें अपने पडोसी देशों से संबंधो को बनाए रखना चाहिए क्यूं कि

---

[2] पांडे नितीश,(2016 अप्रैल). कुलदीप नैयर पत्रकारिता के शिखर पुरुष,जर्नलिस्ट कैफे

[3] नैयर, कुलदीप,(1975).इंडिया आफ्टर नेहरु,कोणार्क पब्लिकेशन

हम कभी भी अपने पड़ोसी नहीं बदल सकते हैं। " भारत - पाक सम्बंधों में एक अहम् मोड़ वाजपेई जी के शासन काल में हुआ, जिसे आज भी लोग याद करते हैं।

इसी कड़ी में पत्रकार कुलदीप नैयर भी हैं जिन्होंने अपनी पूरी छमता के साथ दोनों देशों के संबंधों को सुधारने की कोशिश की, उन्होंने संबंधो में गर्माहट लाने के लिए एक नई पहल की शुरुआत की है जिसमे वह(14 और 15 अगस्त)की रात को वाघा बॉर्डर जा कर दोनों देशों के बीच शान्ति और सौहार्द बनाए रखने के लिए मोमबत्तियां जलाते हैं। ताकि आने वाली पीढ़ियों को एक बेहतर देश के साथ एक अच्छा पड़ोसी मिल सके I

भारत पाक संबंधो के ख़राब होने में बाहरी और आंतरिक कारक भी हैं। अगर आप पाकिस्तान के इतिहास पर नजर डालेंगे तो आपको मिलेगा कि उस पर अमेरिका का शुरू से हस्तक्षेप रहा है। वैसे तो अमेरिका शुरू से मुस्लिम देशों के लोगो कि आँखों में खटकता रहा है इसका प्रमुख कारण है अमेरिका द्वारा इजराइल का समर्थन, लेकिन अगर आप देखें तो पाएंगे कि इन सभी इस्लामिक देशों के जो सम्बन्ध हैं वह हमेशा से अमेरिका से करीबी ही रहे हैं। इसके दो प्रमुख कारण है पहली तो अमेरिका का रूस के साथ शीत युद्ध दूसरा उन इस्लामिक शाशकों द्वारा अमेरिका की चरण वंदना, इस कार्य से उन निरंकुश शाशकों को आपनी सत्ता बचा के रखने में अमेरिका कि मदद और अप्रत्यक्ष स्वीकार्यता भी मिल जाती है।

अमेरिका के साथ साथ यह देश भी नहीं चाहते कि उनके देश में लोकतंत्र स्थापित हो क्यूं कि लोकतंत्र इन दोनों के लिए खतरा है। इसलिए अमेरिका भी उन जगहों पर सैन्य शासन,राजतन्त्र या धर्मतंत्र ही चाहते हैं। जिससे लोग हमेशा भयभीत रहे और अपने हितों कि रक्षा न कर पायें। 2010 में पाक के एक निजी टी.वी चैनल ने एक सर्वे कराया था और पूछा था कि पाक को सबसे ज्यादा खतरा किससे है? ‘आतंकवाद’ से या ‘भारत’ से , अधिकांश पाकिस्तानी जनता ने जवाब दिया ‘भारत’ से। पाक की सेना और सरकार जनता में हमेशा से भारत को अपना सबसे बड़ा खतरा और दुश्मन बताती है। जिससे लोगों में भय व्याप्त रहे।

[4]वैसे तो भारत कि विदेश नीति पंचशील के सिद्धांत में अधिक विश्वास करती है। भारतीय विदेश नीति शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांत का पालन करने का वचन देती है। यह किसी पर आक्रमणकारी नीति नहीं स्थापित करती है। यह जिओ और जीने दो के सिद्धांत पर आधारित है। यह दुसरे राष्टो के अस्तित्व को भी बराबर का स्थान देती है।

विवादों का उदभव व विकास -:

भारत और पाकिस्तान के मध्य विवाद के महत्वपूर्ण बिंदु

1- कश्मीर समस्या- आजादी के चंद दिनों बाद ही कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा भेजे गये मुसलिम कबाइली चरमपंथियों के हमले की वजह से अक्तूबर, 1947 में भारत को महाराजा के बचाव में आना पड़ा, महाराजा ने तय शर्तों के आधार पर भारत में शामिल होना स्वीकार किया I संयुक्त राष्ट्र द्वारा युद्ध विराम रेखा (सीजफायर लाइन) तय कर दिये जाने के बाद 1 जनवरी, 1949 को युद्ध समाप्त हो गया। लेकिन पाकिस्तान को कश्मीर का न मिलने का दर्द आज भी रहता है इस वजह से वह आज भी आतंकवाद और जिहाद के द्वारा कश्मीर को पाने की छद्म कल्पना में जीता है

2- **नदी जल विवाद-**भारत - पाकिस्तान बटवारे के बाद सबसे बड़ा विवाद सिन्धु जल विवाद था। पाकिस्तान में प्रवाहित नदियां सिंधु,झेलम,चनाव,रावी,सतलज, व्यास उदगम् के बाद पहले भारत में प्रवाहित होती हैं फिर पाकिस्तान में, अतः पानी के बटवारे को लेकर विवाद प्रारम्भ से ही शुरू हो गया था। 1960 में विश्व बैंक की मध्यस्थता से सिंधु और उसकी सहायक नदियों के जल बटवारे से सम्बंधित समझौता हुआ।

जिसके तहत सिंधु झेलम चेनाव के जल का आधे से अधिक भाग पर पाकिस्तान का घोषित किया गया जबकि रावी,सतलज, व्यास पर इसीप्रकार भारत के अधिकार को स्वीकार किया गया। लेकिन भारत जब भी सिंधु,झेलम,चेनाव पर कोई परियोजना स्थापित करने लगता है तो पाकिस्तान उसमे ऐतराज जताने लगता है। और कई बार वह विश्व अदालत में विवाद को लेकर चला जाता है जिससे भारत कि कई बड़ी परियोजनाएं बिच में ही रुक जाती हैं । ऐसी ही परियोजनाओं में किशनगंगा परियोजना, बगलिहार परियोजना, तुलबुल परियोजना तथा बुंजी परियोजना हैं।

[4] प्रसाद,मुद्रिका,(2017).अंतराष्ट्रीय सम्बन्ध ,पृष्ठ,64

4-बांग्लादेश की आजादी- पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा पूर्वी पाकिस्तान में बड़े पैमाने पर लोगों का दमन शुरू कर दिया गया था। इससे वहाँ आजादी कि मांग लोगों में उठने लगी। इसके परिणाम स्वरूप पूर्वी पाकिस्तान ने (26 मार्च 1971) को अपने आप को पश्चिमी पाकिस्तान से अलग कर आपने आप को नए राष्ट्र बांग्लादेश के रूप में घोषित कर दिया। इस मुक्ति-युद्ध में बंग्लादेश की मदद के लिए भारत ने बांग्लादेश का साथ दिया था। जिससे पाकिस्तान भारत के संबंधो में और दुराव पैदा हुआ।

3- पाक समर्थित आतंकवाद- भारत-पाक युद्ध 1965 तथा 1971 द्वारा यह साबित हो गया की आमने-सामने के युद्ध में भारत को पराजित नहीं किया जा सकता तो पाकिस्तान ने छदम् युद्ध(proxy war) का सहारा लिया, जिसका एक रूप आतंकवाद है। दोनों देशों के रिश्ते सामान्य नहीं हो पा रहे हैं इसका मुख्य कारण अतंकवाद है। अभी हाल ही में जब वार्ता का दौर प्रारम्भ हो ही रहा था की पठानकोट आतंकी हमला हो गया जिससे वार्ता को कुछ दिन के लिए टाल दिया गया है।

4- **सियाचिन विवाद-** सियाचिन उत्तरी कश्मीर में स्थित एक ग्लेशियर है जिसे पाकिस्तान अपना बतलाता है तथा बीच-बीच में अपने पर्वतारोही और सैनिक भेजता रहता है जिससे बीच-बीच में झड़पें होती रहती हैं इससे निपटने के लिए भारतीय सेना यहाँ आपरेशन मेघदूत चला रही है। यह विश्व का सबसे ऊंचा युद्ध स्थल माना जाता है।

4- **सर क्रिक विवाद-** भारत के पश्चिमी गुजरात और पाकिस्तान के सिंध प्रान्त का तटवर्ती दलदली उथला समुद्री क्षेत्र के बटवारे को लेकर विवाद है। चूँकि इस क्षेत्र का बटवारा सर क्रिक नामक अंग्रेज अधिकारी के नेतृत्व में हुआ था इस लिए इसे सर क्रिक विवाद कहा जाता है। इस क्षेत्र में प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम के भण्डार होने की संभावना है इस लिए दोनों ही देश इस पर अपना दावा प्रस्तुत करते रहते हैं। सन् 1965 में इस मुद्दे को लेकर युद्ध भी हो चूका है लेकिन आजतक कोई समाधान नहीं निकाला जा सका है।

5- पाकिस्तान-चीन की नजदीकियां-पाकिस्तान पाक अधिकृत कश्मीर का लगभग 5000 वर्ग कि मी भाग चीन को दे रखा है। जिसे अक्साई चिन कहा जाता है। यह क्षेत्र सामरिक महत्त्व का है। जो भारत के सुरक्षा हितों के प्रतिकूल है। चीन इस क्षेत्र से कराकोरम राजमार्ग बना लिया है। जिसके माध्यम से पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाला गलियारा बना कर अरब सागर में अपनी उपस्थिति दर्ज करना चाहता है। जोकि भारत के सामरिक हितों के प्रतिकूल है।

कुछ प्रमुख समझौते

- जिन्ना- माउंटबेटन वार्ता (1947) : पाकिस्तान के गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना और भारत के गवर्नर जनरल लुइस माउंटबेटन के बीच कश्मीर मसले पर नवंबर, 1947 में वार्ता।
- कराची समझौता (1949) : दोनों देशों के सैन्य नेतृत्व के बीच 27 जुलाई, 1949 को सीजफायर समझौता।
- लियाकत-नेहरू समझौता (1950) : लियाकत-नेहरू पैक्ट या दिल्ली पैक्ट के तहत दोनों देशों के बीच शरणार्थी, संपत्ति, अल्पसंख्यकों के अधिकार के मुद्दों पर समझौता।
- सिंधु जल-संधि (1960) : सिंधु और उसकी अन्य सहायक नदियों के जल बंटवारों को लेकर 19 सितंबर, 1960 को समझौता।
- ताशकंद समझौता (1966) : 1965 में भारत-पाक युद्ध के बाद दोनों देशों के बीच 10 जनवरी, 1966 को शांति समझौता।
- शिमला समझौता (1972) : 1971 में हुए बांग्लादेश मुक्ति युद्ध के बाद विवादों खत्म करने के लिए शिमला में 2 जुलाई, 1972 को दोनों देश सहमत हो गये थे।
- दिल्ली समझौता (1973) : 28 अगस्त, 1973 को हुआ यह तीन देशों भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के बीच समझौता था।
- इसलामाबाद समझौता (1988) : नॉन-न्यूक्लियर एग्रीमेंट के नाम से भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो के बीच 21 दिसंबर, 1988 को समझौता हुआ था।

कुलदीप नैयर, जन्म और उपलब्धियां-:

कुलदीप नैयर का जन्म 14 अगस्त 1924 को सियालकोट अब (पाकिस्तान) में हुआ था। कुलदीप नैयर की स्कूली शिक्षा सियालकोट में हुई और कानून की डिग्री लाहौर से प्राप्त की। उन्होंने यू.एस.ए .से पत्रकारिता की डिग्री ली। इसके बाद उन्होंने अमृतसर की गुरु नानकदेव विश्विद्यालय से दर्शन शास्त्र में पी.एच.डी की मानक उपाधि प्राप्त किया तथा आंध्र प्रदेश की नागार्जुन विश्विद्यालय से 'डाक्टरेट इन जर्नलिज्म' कि भी डिग्री उन्होंने प्राप्त किया। वे पेशे से वकील बनना चाहते थे, लेकिन जब तक वे अपनी वकालत जमा पाते, उससे पहले ही देश का बंटवारा हो गया।

वे अपनी किताब 'एक जिंदगी काफी नहीं' में लिखते हैं कि [5]*लाहौर अधिवेशन में जब पाकिस्तान का प्रस्ताव पास हुआ उस वक्त मै उस अधिवेशन में भी मौजूद था।* उनका परिवार सियालकोट छोड़कर भारत आ गया। यहां उन्होंने पत्रकारिता को आजीविका का माध्यम बनाया। पत्रकारिता जीवन का आरंभ उर्दू समाचार पत्र 'अंजाम' से किया। कुलदीप नैयर ने, न सिर्फ यूएनआई के स्थापित सदस्यों में शामिल रहे, अपितु इसे ब्रेकिंग और खास खबर का अड्डा बना दिया। यूएनआई के बाद उन्होंने पी.आई.बी 'द स्टैट्समैन' 'इंडियन एक्सप्रेस' के साथ लंबे समय तक जुड़े रहे।

कुलदीप नैयर 25 वर्षों तक 'द टाइम्स' लन्दन के संवाददाता भी रहे। 'इंडियन एक्सप्रेस' में कुलदीप नैयर 'बिटवीन द लाइन्स' नाम से कॉलम लिखते थे। इसमें वे सरकार के क्रिया-कलापों की खूब खिंचाई करते थे। हालांकि, तब आपातकाल लागू था। फिर भी उन्होंने अपनी कलम नहीं रोकी। सत्ता की तानाशाही के खिलाफ वे लिखते रहे। इन सब के बावजूद कुलदीप नैयर लगातार और उसी धार से तत्कालीन सरकार के नीतियों पर लिखते रहे। जिससे अंत मे परेशान हो कर सरकार ने उन्हे भी आपातकाल के दौरान जेल मे डाल दिया।

कुलदीप नैयर एक ऐसे पत्रकार हैं जिन्होने जवाहर लाला नेहरू से लेकर नरेंद्र मोदी तक कि सरकार को देखा है। इस दौरान उनके संबंध बड़े बड़े राजनेताओं से रहे हैं। परंतु इसका फायदा कभी भी उन्होने अपने निजी स्वार्थ के लिए नहीं लिया। उन्होने अपने संबंध को पत्रकारिय पेशे तक ही सीमित रखा। ऐसी ही एक घटना को याद करते हुए कुलदीप नैयर अपनी पुस्तक 'एक जिंदगी काफी नहीं' मे लिखते हैं, कि जब वह सूचना अधिकारी थे तो उस समय नेहरू जी एक भूमि संबन्धित बिल पेश करने वाले थे। जो किसानो के पक्ष मे उस समय नहीं माना जाता था।

चूकिं उस समय यह सूचना अधिकारी थे, इसलिए इन्हे अंदर कि सारी बाते पता रहती थीं। उन्होने इस सूचना को पहले ही लीक कर दी तथा सरकारी पद छोड़ कर यूएनआई मे आ गए। इंडियन एक्सप्रेस के संपादक रहते हुए कुलदीप नैयर आपातकाल के खिलाफ पत्रकारीय प्रतिरोध के अग्रदूत व प्रतीक बनकर उभरे। इस दौरान सरकारी अत्याचार के खिलाफ विरोध की अगुआई करने पर उन्हें मीसा जैसे दमनकारी कानून के तहत जेल में डाल दिया गया।

[5] नैयर,कुलदीप,(2012 हिंदी अनुवाद युगांक धीर).एक जिंदगी काफी नहीं,पृष्ठ,

इन तमाम पहलुओं पर नजर डालते हैं तो हम पाते हैं कि कुलदीप नैयर शुद्ध रूप से पत्रकारिता के लिए समर्पित रहे हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व मे कभी ज्यादा अंतर देखने को नहीं मिलता है। आज जहां पत्रकारिता के मूल्यों मे तेजी से गिरावट आ रही है। वहीं इस प्रकार के पत्रकार हमारी नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा श्रोत्र हैं।

शोध का उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध द्वारा कुलदीप नैयर के लिखे गये लेखों का अंतर्वस्तु विश्लेषण कर उसकी प्रसंगिकता को जांचना।

शोध प्रश्न-:

1. कुलदीप नैयर का जीवन संघर्ष क्या रहा है ?
2. कुलदीप नैयर का भारत के विदेश नीति पर कैसा दृष्टिकोण है?
3. कुलदीप नैयर का पाकिस्तान कि विदेश नीति पर कैसा दृष्टिकोण है?
4. कुलदीप नैयर का जम्मू कश्मीर को लेकर क्या दृष्टिकोण है ?
5. कुलदीप नैयर कि भारत पाकिस्तान के सम्बन्धो को लेकर क्या दृष्टिकोण है?

शोध प्रविधि –

इस शोध के अंतर्गत गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार की शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा। जिसमे गुणात्मक शोध के अंतर्गत ऐतिहासिक एवं अंतर्वस्तु विश्लेषण का प्रयोग किया जाएगा। तथा उस घटना से संबन्धित लोगों का साक्षत्कार एवं वैयक्तिक अध्ययन भी किया गया है।

शोध सीमा –

- कुलदीप नैयर द्वारा भारत पाक संबंधो पर लिखे गए लेखों का अध्ययन किया गया है।
- इसमें 10 साल (2008-2017)के कुल 25 लेखों का अध्ययन कर उनका अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है।
- यह सारे लेख http://www.kuldipnayar.com/columns.htm वेबसाईट से ही लिया गया है।

शोध महत्व –

अब तक जानकारी के अनुसार पत्रकारिता को अपना जीवन मानने वाले कुलदीप नैयर के पत्रकारीय व्यक्तित्व में भारत पाक संबंधो को सुधरने की दृष्टि से किये गए प्रयत्नों को देखना एवं उसकी प्रासंगिकता को जाँचना।